

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये सप्तदशं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে সপ্তদশং দশকম্ ॥

ধ্বরচরিতর্গনম্

উত্তানপাদনূপতের্মনুনন্দনস্য

জাযা বভূর সুরুচির্নিতরামভীষ্টা।

অন্যা সুনীতিরিতি ভর্তুরনাদৃতা সা

৳রামের নিত্যমগতিঃ শরণং গতাহভূৎ ॥ 17.1 ॥

অঙ্কে পিতুস্সুরুচিপুত্রকমুত্তমং তং

দৃষ্টরা ধ্বরঃ কিল সুনীতিসুতোহধিরোক্ষ্যন্।

আচিক্ষিপে কিল শিশুঃ সুতরাং সুরুচ্যা

দুস্সন্ত্যজা খলু ভরদ্বিমুখৈরসূযা ॥ 17.2 ॥

৳রমোহিতে পিতরি পশ্যতি দাররশ্যে

দূরং দুরুক্তিনিহতঃ স গতো নিজাম্বাম্।

সাহপি স্বকর্মগতিসন্তরণায় পুংসাং

৳রংপাদমের শরণং শিশরে শশংস ॥ 17.3 ॥

আকর্গ্য সোহপি ভরদর্চননিশ্চিতাত্মা

মানী নিরেত্য নগরাৎ কিল পঞ্চরর্ষঃ।

সন্দৃষ্টনারদনিরেদিতমন্ত্রমার্গঃ

৳রামাররাধ তপসা মধুকাননান্তে ॥ 17.4 ॥

তাতে ঝিষগ্নহৃদযে নগরীং গতেন

শ্রীনারদেন পরিসাল্হিতচিত্তবৃত্তৌ।

बालञ्जुदर्पितमनाः क्रमर्धितेन
निन्ये कठोरतपसा किल पञ्चमासान् ॥ 17.5 ॥

तारुतपोबलनिरुच्छ्रसिते दिगन्ते
देरार्थितञ्जुमुदयङ्करुणार्द्रचेताः।
एरद्रपचिद्रसनिलीनमतेः पुरस्ता -
दारिर्बभूरिथ रिभो गरुडाधिरुचः ॥ 17.6 ॥

एरदर्शनप्रमदभारतरङ्गितं तं
दृग्भ्यां निमग्नमिर रूपरसायने ते।
तुष्टुषमाणमरगम्य कपोलदेशे
संस्पृष्टरानसि दरेण तथाहदरेण ॥ 17.7 ॥

तारद्विबोधरिमलं प्रणुरन्तमेन -
माभाषथाञ्जुमरगम्य तदीयभारम्।
राज्यं चिरं समनुभूय भजस्व भूयः
सर्षोत्तरं क्षुर पदं रिनिर्बृतिहीनम् ॥ 17.8 ॥

इत्युचिषि एरयि गते नृपनन्दनोऽसा -
रानन्दिताखिलजनो नगरीमुपेतः।
रेमे चिरं भरदनुग्रहपूर्णकामः
ताते गते च रनमादृतराज्यभारः ॥ 17.9 ॥

यक्शेण देर निहते पुनरुत्तमेऽस्मिन्
यक्शेः स युद्धनिरतो रिरतो मनूज्या।
शान्त्या प्रसन्नहृदयाङ्कनदादुपेतां
एरुत्तुक्तिमेर सुदृढामर्षुणोन्महात्मा ॥ 17.10 ॥

अन्ते भरपुरुषनीतरिमानयातो
मात्रा समं क्षुरपदे मुदितोऽहयमास्ते।

एरं स्रुतुतुजनपालनलोलधीसुतुं
रगतलयाधिप निरुक्कि ममामयौघान् ॥ 17.11 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तदशं दशकं समाप्तम् ॥